ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

समकालीन हिन्दी कहानी में नारी शोषण
Exploitation of Women in Contemporary Hindi Story

Paper Submission: 05/02/2021, Date of Acceptance: 20/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

ऋषिपाल
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय, कौल, कैथल
हरियाणा, भारत

सारांश

जड़–चेतन सम्पूर्ण सृष्टि नर नारीमय में है। जीवन का सारा रस, उसकी लीला, उसका आनन्द, इस द्वैतता से ही गतिशील होकर ही रंग रूप पाता है। नर और नारी में विषमता है, इसलिए दोनों में आकर्षण भी है, विकर्षण भी है। नारी ईश्वर की अनुपम कृति है। ये सृष्टि की तरह अनादि, अनन्त और सनातन है। ये सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका और विकास की त्रिवेणी है। नारी माँ, बहन, बेटी, पत्नी, सास, बहू आदि अनेक रूपों में समाज में कार्यरत है। ननद, भाभी, देवरानी, जेठानी, बहन, साली आदि नारी के अनेक रूप हैं। बाल–विवाह, अनमेल विवाह, दहेज–प्रथा, विधवा–समस्या, परित्यक्ता, सौतेली माँ, वेश्या आदि अनेक नारी की समस्याएँ हैं। वर्तमान भौतिकवादी परिस्थितियों में नर और नारी के बीच अनेक विकृतियों और विद्रूपताओं ने जन्म लिया है। नारी अपने हर रूप, सम्बन्ध और रिश्ते में, जीवन के हर क्षेत्र और स्थान पर पुरुष के शोषण का शिकार होती है।

The whole creation is rooted in the male and female. All the juice of life, its leela, its joy, gets color only by moving in this dualism. There is an asymmetry between male and female, so both have attraction and distraction. Woman is a unique work of God. It is eternal, eternal and eternal like creation. This is the Triveni of creation, counterparty and development of the universe. Woman, mother, sister, daughter, wife, mother-in-law, daughter-in-law, etc. are employed in society in many forms. Child marriage, mismatched marriage, dowry-practice, widow-problem, abandonment, step-mother, prostitute etc. are many women's problems. In the present materialistic conditions, many distortions and mutinies have arisen between male and female. In every form of relationship, woman is a victim of exploitation of man in all spheres of life.

मुख्य शब्द : समकालीन, हिन्दी कहानी, नारी, परिवार।
Contemporary, Hindi Story, Women, Family.

प्रस्तावना

प्रकृति ने पुरुष को नारी से अधिक सबल और सशक्त शरीर दिया है। युगों–युगों से पुरुष अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए नारी के कोमल और सुकुमार शरीर का शोषण करता आया है। भारतीय नारी का प्रमुख कार्यक्षेत्र पारिवारिक परिधि है। परिवार नारी का पालन–पोषण, संरक्षण, शिक्षा–दीक्षा, सुरक्षा आदि का मुख्य आधार होता है। परिवार में रहकर ही नारी संस्कार–ग्रहण करती है तथा विवाहित होकर ससुराल के प्रति अपने दायित्व को निभाती है। परिवार के सदस्य परस्पर एक दूसरे के सुख–दुःख में सहायक होते हैं। परिवार के बिना समाज की निरन्तरता सम्भव नहीं, क्योंकि परिवार ही बच्चों को उत्पन्न करता है और वे परिजन जो मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं उनकी पूर्ति करता है। परिवार में हर सदस्य का एक विशेष पद होता है और उससे पद के अनुरूप कुछ विशेष दायित्व वहन करने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार परिवार के सभी सदस्यों में उनके पदों और कार्यों का एक संतुलित ढंग से विभाजन रहता है। इसके बाद परिवार के लिए त्याग की भावना, विचार–विनिमय, आय की आवश्यकता अनुसार वितरण, नैतिक मान्यताओं में विश्वास, गृहपति के आदेशों का पालन, अन्य विशेष महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं जो एक परिवार के संगठन में सहायक होते हैं।''[1]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य समकालीन हिन्दी कहानी में नारी शोषण का अध्ययन करना है।

विषय विस्तार

डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी नारी के बारे में लिखते हैं कि, ''जहां कहीं अपने आप को उत्सर्ग करने की, अपने आप को खपा देने की भावना प्रधान है, वह नारी है।''[2] नारी के बिना और नर के बिना नारी परस्पर अधूरे हैं। नारी और नर के आपसी सहयोग से ही यह सृष्टि अस्तित्व में आई है। नारी और नर का आकर्षण एक शाश्वत सत्य है। नारी को प्रकृति रूपा भी कहा गया है। परिवार स्त्री और पुरुष के लैंगिक सम्बन्ध का एक सुनिश्चित रूप है। यह सम्बन्ध इतना स्थायी होता है कि पति–पत्नी के संयोग से उत्पन्न बच्चों का पालन–पोषण, उनकी शिक्षा–दीक्षा का पूरा दायित्व उस स्त्री–पुरुष पर ही होता है, जो उस परिवार का निर्माण करते हैं। परिवार के बारे में समाजशास्त्र की मान्यताएँ हैं कि – 1. स्त्री और पुरुष में लैंगिक सम्बन्ध, 2. विवाह का कोई ऐसा प्रकार जिसके द्वारा लैंगिक सम्बन्ध सुव्यवस्थित रूप से स्थापित हो जाए और वह इतना स्थायी भी रहे ताकि उसे एक सुव्यवस्थित संस्था का रूप प्राप्त हो जाए, 3. स्त्री–पुरुष का यह सम्बन्ध अपनी छाप भविष्य पर भी छोड़ जाए। ऐसी व्यवस्था हो, जिसके द्वारा उनकी सन्तान उनके नाम से जानी जाए या सन्तान का माता–पिता के साथ सम्बन्ध स्पष्ट रूप से माना जाए, 4. अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार के सदस्य मिलकर करें, 5. ऐसा सांझा निवास स्थान, जहाँ परिवार के सदस्य साथ मिलकर निवास करते हों, इसी को घर कहते हैं।[3] नारी का भरण–पोषण पति द्वारा होता है अतः वह 'भार्या' कहलाती है।[4]

वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यन्त सम्मानजनक थी। उस युग में नारी का स्थान अत्यन्त गरिमामयी व गौरवपूर्ण था। उसे पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। समाज में पति को पत्नी के बिना अपूर्ण समझा जाता था।[5] वर्तमान दौर में वैज्ञानिक उन्नति के परिणाम स्वरूप जो भौतिकता छाई है और व्यक्ति में प्रत्येक दिन नई सुविधाओं को एकत्रित करने की जो तृष्णा पैदा हुई है, उसके कारण हमारा पारिवारिक ढांचा चरमरा गया है। पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण ने पारिवारिक सद्भाव को लगभग समाप्त कर दिया है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानी 'ये दूरियाँ' पारिवारिक सद्भाव में आ गई दरार को व्यंजित करती हैं। डॉ. विजयावारद के शब्दों में – ''यह कहानी एक ऐसे अत्याधुनिक परिवार से जुड़ी हुई है जिनको किसी भी बात की कमी नहीं है। बाहर की दुनिया में 'मेड फॉर इच अदर' की दृष्टि से जीने वाले छत के नीचे भयावह दूरियाँ रख कर जीते हैं। इन दूरियों के कारणों की जानकारी दोनों को भी नहीं है। ऐसा क्या कुछ है कि जिससे ये दूरियाँ पैदा हुई हैं। अपनी लड़की के बर्थ–डे पर उपहार प्रेजेंट करने वाले पिता और 'मेड फॉर इच अदर' स्पर्धा में प्रथम क्रमांक हासिल करने वाले पति–पत्नी घर में एक दूसरे से अलग–अलग जिन्दगी जी रहे हैं। वास्तव में पाश्चात्य जीवन दर्शन के अन्धानुकरण का यह परिणाम है। एक–दूसरे के प्रति जहाँ समर्पण की भावना नहीं, त्याग नहीं, समझौता नहीं, वहाँ दूरियाँ बनी रहेंगी ही और पारस्परिक अपनत्व खंडित होता रहता है।''[6]

वर्तमान भारतीय समाज में नारी के लिए अनेक समस्यायें हैं। हमारे समाज में नारी और पुरुष को लेकर दोहरे मापदण्ड अपनाये जाते हैं। वर्तमान में नारी की स्थिति के बारे में डॉ॰ भगवानदास वर्मा ने ठीक लिखा है कि, ''नारी और पुरुष के सम्बन्ध अब अजनबी या विलक्षण नहीं, बहुत सहज, स्वाभाविक एवं यथार्थ बन गए हैं। आधुनिक नारी केवल नारी नहीं है, पुरुष की चिता में जल कर मर जाने वाली सती नहीं है।[7] भारतीय समाज की पारिवारिक मान्यताओं में नारी का शोषण सामान्य–सी बात है। समकालीन हिन्दी कहानियों में अनेक बार इसका चित्रण स्पष्ट दिखाई देता है। मालती जोशी की 'अक्षम्य' कहानी का नायक श्याम अपनी पत्नी बिन्दू से वितृष्णा करता है क्योंकि वह सुन्दर नहीं है। श्याम की माँ दहेज कम लाने के कारण बहु से अप्रसन्न है। इसलिए वह बहू के विरुद्ध बेटे के कान भरती रहती है और बेटा भी माँ की बात का विश्वास करके पत्नी को पीटता रहता है। इतना ही नहीं उसकी सास बहू के चरित्र पर आरोप लगाती हुई उसके सम्बन्ध रज्जू हलवाई के साथ अवैध रूप से बताती है। श्याम की पत्नी अपने सास–ससुर व पति के अत्याचारों को सहन करती है लेकिन जब उस पर चरित्रहीनता का आरोप लगाया जाता है तो वह पति से कहती है – ''जानती हूँ तुम्हारी माँ ने अपना अनाचार ढकने के लिए मुझ पर यह तोहमत लगाई है। मेरे यहाँ रहने से उनकी आजादी में खलल पड़ा है न।''[8] इसमें कोई सन्देह नहीं कि नारी से जुड़े परम्परागत मापदण्ड छिन्न–भिन्न हो गए हैं।

भारतीय जीवन जगत एवं साहित्य में नारी की उदात्तता का चरम निर्देशन उसके मातृ रूप में व्यक्त हुआ है। मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है। मातृत्व के अभाव में, नारी का मन विकृतियों से भर जाता है। काल प्रवाह में, नारी का गौरव कई बार विषय स्थितियों से जूझते समय घटता–बढ़ता गया, परन्तु नारी के मातृत्व की गरिमा सदैव अक्षुण्ण बनी रही है।[9] वर्तमान के पारिवारिक वातावरण में जब से भौतिकवाद का दखल हुआ है, माँ–बाप की दशा बिगड़ी है। बूढ़ी माँ अपने ही बेटों द्वारा शोषित होती है। बेटे ही नहीं बहू भी उसका जमकर शोषण करती है। मालती जोशी की 'चाहत' कहानी की सुषमा अपनी माँ के शोषण पर प्रकाश डालती हुई कहती है – ''वाह! तुम कितनी ठसक से रहती थी, मैं क्या जानती नहीं। दिनभर अपने कमरे में बन्द रहना पड़ता था। सिर्फ खाने के वक्त बाहर आने की इजाजत थी। बाहर वालों से बात करने की सख्त मनाही थी। फोन तुम छू नहीं सकती थी। तुम्हारी चिट्ठियां सैंसर होती थी। बच्चों को तुम्हारी छाया तक से दूर रखा जाता था। अपनी मर्जी का खाना बनवाना तो बहुत दूर की बात है, तुम्हारा रसोई में झांकना

तक गुनाह था। इसे तुम ठसक के साथ रहना कहती हो?''[10]

पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से भारतीय समाज में अधकचरी आधुनिकता और भोगवादिता ने मातृत्व के मूल्यों को भी विघटित कर दिया है। ममता कालिया की 'तासीर' कहानी में पारिवारिक सम्बन्धों में एक माँ के शोषण का यथार्थ चित्रण खींचा गया है। माँ बीमार है। हस्पताल में दाखिल है। बेटा बहुत बड़ा अधिकारी है। वह केवल आधे घण्टे के लिए अपनी माँ को देखने के लिए आता है। इस कहानी में बहू अपनी सास के पास नहीं रहना चाहती और पेरेंट टीचर मीटिंग का बहाना बनाकर अस्पताल से जल्दी ही चली जाती है। इस परिवार का पोता दादी को केवल 'गैट वैल' का कार्ड भेजकर अपने दायित्व से मुक्त हो जाता है। इस कहानी के पिता नरोत्तम जी बेटे बहू के चले जाने के बाद अर्धचेतन अवस्था में लेटी हुई अपनी पत्नी से कहते हैं – ''चला गया तुम्हारा बेटा! बिस्सू, इसे तुमने पैदा किया, पाला–पोसा। याद है कैसे इसकी जरा नाक बहते ही तुम मेरी नाक में दम कर देती थीं, डॉक्टर को बुलाओ, खिड़की बन्द करो, नया कंबल लाओ। यह लाट साब सो जाता था, तुम इसका होमवर्क करती थी, आधी–आधी रात तक। आज तुम बेहोश पड़ी हो और बेटे को फुर्सत नहीं, तुम्हारे पास बैठने की। मुझ से कहता है, नटशैल में बताइए, मम्मी को क्या हुआ है। बदतमीज, गधा कहीं का। दफ्तर की भाषा अपने बाप को बोलता है। क्या तुम्हारी हालत और अपनी परेशानी मै नटशैल में बता सकता हूँ। क्या यह हाउ आर यू, फाइन, थैंक्यू जैसी सिचुएशन है? मैंने भी बहुत अफसरी की पर कभी भी अपने बाप को अपना क्लर्क नहीं समझा। ये तुम्हें देखने नहीं, विजिट पे करने आए थे। जब ये पोते पैदा हुए, तुम अपना नहाना, खाना भूल, रात–दिन लगी रही इनमें। आज बहू को तुम्हारे लिए वक्त नहीं है। सुना तुमने, किसी को फुर्सत नहीं है तुम्हारे लिए।''[11] प्रस्तुत कहानी में पारिवारिक सन्दर्भों में नारी के माँ रूप का शोषण बड़ी सजीवता और सशक्तता से कहानी में व्यक्त हुआ है।

भारतीय समाज और संस्कृति में माँ का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। माँ बच्चे को जन्म देने के लिए अपनी कोख में रखती है और प्रसव की असहनीय पीड़ा को सहन करती है। इसी कारण कहा जाता है कि माँ का ऋण कोई नहीं उतार सकता। भारतीय समाज में नारी का माँ बनना आवश्यक माना गया है। पति को नारी का माँ बनना खुशी प्रदान करता है। लेकिन मृदुला गर्ग की कहानी 'मेरा' में पत्नी मीता शिशु को जन्म देना चाहती है, लेकिन पति महेन्द्र उसे गिरा देना चाहता है। वह मीता से कहता है – ''अगर यही बच्चा अब न होकर पाँच साल बाद हुआ तो सब कुछ होगा हमारे पास, बड़ा घर, गाड़ी, फ्रिज सब। मीता, मैं नहीं चाहता मेरा बेटा हमारी तरह गरीबी और अभाव में पले।''[12] महेन्द्र मीता का अबोर्शन करवाना चाहता है, लेकिन अन्ततः मीता ऐसा नहीं करती। इससे इस कहानी के दाम्पत्य जीवन की एक नई मान्यता का उद्घाटन होता है। बहू के रूप में नारी का शोषण सामान्य सी बात है। तेजेन्द्र शर्मा की मलबे की 'मालकिन' कहानी में, ''अमिता अभी 17 वर्ष की थी कि रामखिलावन यादव से उसकी शादी हो जाती है। पहली ही रात पति के वहशियाना बर्ताव ने सब कुछ समझा दिया था कि अमिता अमिता यादव बने रहने के लिए, जीवन भर क्या–क्या सहना पड़ेगा। .... जैसे एक भेड़िया टूट पड़ा था अपने शिकार पर। निरीह मेमने की तरह बेबस–सी पड़ी थी मैं। पीड़ा की एक तेज लहर टांगों को चीरती हुई निकल गई थी। ..... शराब और तम्बाकू की महक, उबकाई को दावत दे रही थी। .... दर्द ने चीख को बाहर निकालने को मजबूर कर ही दिया। चीख की परवाह किसे थी। चादर लहू से लथपथ हो रही थी। .... चेहरे पर विजयी मुस्कान लिए वोह। .... जो मेरा रखवाला था, स्वयं ही मुझे जख्मी और आहत छोड़कर आराम की नींद सो रहा था।''[13]

दहेज भारतीय समाज का कलंक है। आज का व्यक्ति दहेज के लालच में सभी तरह के मूल्यों को कुचल कर रख देता है। प्रमुख समाज शास्त्री डॉ. रवीन्द्र नाथ मुखर्जी लिखते हैं कि, ''दहेज वह धन या उपहार है जिसे लड़की के माता–पिता विवाह के उपलक्ष्य में अपनी इच्छा से वर पक्ष को देते हैं।[14] वर्तमान में दहेज के कारण सास और बहू में दूरी बढ़ जाती है। सुधा गोयल की कहानी 'मन की अदालत' दहेज के कारण बहू को बुरी तरह से पीटने और फिर आग के हवाले कर देने की मार्मिक कहानी है। इस कहानी में बहू अपने मायके से जो कुछ भी लाती है, सास उसे उठाकर अपनी बेटियों को दे देती है। बहू बहुत ही सहनशील और सुशील है। सास हमेशा बहू की बुराई करती है। वह स्वयं जवानी में विधवा हो गई थी। पति को माँ का स्वभाव बुरा लगता है लेकिन सोमा (बहू) पति से कहती है – ''माँ मन की बुरी नहीं, उनकी नाराजगी का एक मुख्य कारण है, उन्हें लगता है कि मैंने उनका बेटा ही नहीं, एकाधिकार भी छीन लिया है, क्योंकि अब तुम हर छोटी–छोटी जरूरत के लिए अम्मा–अम्मा कहकर उनसे नहीं लिपटते। तुम्हारी जरूरतें मैं ही पूरी कर देती हूँ।''[15] अखिलेश की कहानी 'बायोडाटा' में एक पति–पत्नी की इच्छा के विरुद्ध उसके मायके जबरदस्ती भेजकर उसे गालियाँ देकर पत्नी का मानसिक शोषण करता है – ''वह भड़क गया, ''ठीक है, देखता हूँ, कैसे नहीं जाती हो। मैं बहुत ही खतरनाक इन्सान हूँ। तुमने मुझे समझा नहीं है। मेरी कमीनगी अभी देखी कहाँ है। मैं किसी बात पर अड़ जाता हूँ तो फिर अड़ ही जाता हूँ। मैं कहता हूँ तुम्हें जाना ही पड़ेगा, जाना पड़ेगा ... एक नहीं हजार बार जाना पड़ेगा ...।'' उसे खांसी आ गई, खों .... खों .... खों करने के बाद वह पुनः भड़का, 'मैं किसी को आसमान में चढ़ा सकता हूँ तो उसे धरती पर पटक भी सकता हूँ .... कुतिया कहीं की .. .. ।''[16]

निष्कर्ष

सारांशतः कह सकते हैं कि वैसे तो नारी परिवार और समाज दोनों को आगे ले जाने वाला मुख्य आधार है लेकिन विडम्बना है कि परिवार की परिधि में ही नारी का निरन्तर शोषण होता है। भारतीय परिवार पुरुष प्रधान

परिवार है और पुरुष अपनी शक्ति के दम्भ में नारी के स्वाभिमान को कुचलने में अपनी आत्म तुष्टि मानता है। समाज में दोहरे मानदण्ड हैं। भारतीय नारी परिवार के जिन लोगों के सुख, शान्ति और सद्भाव के लिए अपना जीवन खपा देती है। वही लोग नारी के शोषण का कोई भी अवसर खाली नहीं जाने देते। भारतीय समाज में हर रूप, हर क्षेत्र, हर स्थान पर नारी का शोषण होता है। कहीं भी वह सुरक्षित अनुभव नहीं करती, लगता है शोषण भारतीय नारी की नियति बन गया है। वैसे तो नारी की वर्तमान स्थिति पूर्व के युगों से कहीं अधिक सम्मानजनक और अधिकार सम्मत है। शिक्षित नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत व जागरूक भी है। न्यायिक और संवैधानिक दृष्टि से भी नारी की स्थिति पुरुष से कहीं अच्छी, सुदृढ़ और उसे संरक्षण प्रदान करने वाली है फिर भी इन सभी समानताओं, विशिष्टताओं, कानूनों व अधिकारों के होते हुए भी पुरुष द्वारा नारी का शोषण सामान्य बात है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. धर्मेन्द्र श्री वास्तव, हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक विघटन, उमेश प्रकाशन, 100 लूकरगंज, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1995, पृ. 11–12*
2. *डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ॰ 224*
3. *डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, समाज शास्त्र, सरस्वती सदन, मंसूरी, प्रथम संस्करण, 1980, पृ. 379*
4. *डॉ॰ सौ.जे.एम. देसाई, आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी, पृ॰ 10*
5. *कल्याण, नारी विशेषांक, पृ॰ 130*
6. *डॉ. विजयावारद साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ, विकास प्रकाशन, साकेत नगर, कानपुर, पृ. 99*
7. *डॉ॰ भगवान दास वर्मा का लेख 'आधुनिक नारी' दैनिक भास्कर, 14.04.2000*
8. *मालती जोशी 'अक्षम्य' (बोल री कठपुतली), किताब घर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 25*
9. *डॉ॰ सौ.जे.एम. देसाई, आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी, पृ॰ 13*
10. *मालती जोशी, चाहत, बुलबुल का घर, विकास पेपर बैक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 86*
11. *ममता कालिया, तासीर, बोलने वाली औरत, राजभवन प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1981, पृ. 61*
12. *मृदुला गर्ग, मेरा (डेफिडोल जल रहे हैं), अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986, पृ. 57*
13. *डॉ. तेजिन्द्र शर्मा, मलबे की मालकिन (देह की कीमत), नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982, पृ. 22*
14. *रवीन्द्र नाथ मुखर्जी, भारतीय सभ्यता व संस्कृति, पृ॰ 342*
15. *सुधा गोयल, मन की अदालत (वन वासिनी), किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1987, पृ. 106*
16. *अखिलेश, बायोडाटा, 'शाप ग्रस्त', राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण, 1997, पृ. 70*